(नियमसार प्रवचन, पृष्ठ 23 का शेष ...)

अहा ! एक रस की पर्यायवाला, एक वर्ण की पर्यायवाला, एक गंध की और दो स्पर्श की पर्यायवाला परमाणु है। वह शब्द का कारण है; परन्तु स्वयं अशब्द है। इस स्कन्ध में चाहे जितने रजकण हों, उनमें शब्द नहीं है; तथापि वे शब्द के कारण हैं और स्कन्ध के अन्दर होने पर भी वे परमाणु तो द्रव्य है। देखो तो सही ! वह रजकण देह में हो या अन्य स्कन्ध में हो, वह द्रव्य है अर्थात् सदा सर्व से भिन्न, शुद्ध एक द्रव्य है। शुद्ध अर्थात् अकेला है। स्कन्ध में विभावरूप परिणाम होने पर भी उसमें स्थित परमाणु तो अकेला है, शुद्ध एकद्रव्य है। वस्तुरूप से देखने पर वह शुद्धद्रव्य पर के सम्बंध से रहित भिन्न वस्तु है। अहा ! अपने छोटे क्षेत्र में रहने पर भी वह परमाणु अपने स्वचतुष्टय में ही है ह्न ऐसी बात सर्वज्ञ के अलावा और कौन कह सकता है ? **(क्रमशः)**

20 माह में 3 संस्करण समाप्त

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल कृत **ज्ञायकभावप्रबोधिनी** हिन्दी टीका सहित **समयसार** के 10 हजार प्रतियों के 3 संस्करण मात्र 20 माह की अल्पावधि में ही समाप्त हो गये हैं ।

अब 2 हजार प्रतियों का **परिवर्धित चौथा संस्करण** छपकर तैयार है; इसमें गत संस्करणों से **24 पृष्ठ अधिक** हैं।

672 पृष्ठों के इस संस्करण का **लागत मूल्य 120 रुपये** है; किन्तु दातारों के सहयोग से यह आपको **मात्र 50 रुपये** में ही उपलब्ध हो रहा है।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 26 297 अंक : 9

हम तो कबहुँ न निज घर आये...

हम तो कबहुँ न निज घर आये।
परघर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये।। टेक।।
परपद निजपद मानि मगन ह्वे, परपरनति लपटाये।
शुद्ध बुद्ध सुखकन्द मनोहर, चेतनभाव न भाये ।।
हम तो कबहुँ न निज घर आये।।1।।
नर पशु देव नरक निज जान्यो, परजय बुद्धि लहाये।
अमल अतुल अखण्ड अविनाशी, आतमगुन नहिं गाये।।
हम तो कबहुँ न निज घर आये।।2।।
यह बहु भूल भई हमरी फिर, कहा काज पछताये।
'दौल' तजौ अजहूँ विषयन को, सतगुरु वचन सुनाये।।
हम तो कबहुँ न निज घर आये।।3।।

ह्न पण्डित दौलतरामजी

* * *

पराश्रय से संसार, स्वाश्रय से मुक्ति

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 46 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

अविद्वान्पुद्गलद्रव्यं योऽभिनन्दति तस्य तत् ।
न जातु जन्तोः सामीप्यं चतुर्गतिषु मुञ्चति ।।46।।

जो अविद्वान (हेय-उपादेय को न जाननेवाला) पुद्गल द्रव्य को श्रद्धता है, उस बिचारे जीव का समीपपना वह पुद्गल द्रव्य नरकादि चार गतियों में कभी भी नहीं छोड़ता।

(गतांक से आगे...)

लोगों को हेय और उपादेय का भान नहीं है। हेय उपादेय के स्वरूप को नहीं समझनेवालों को ही यहाँ अविद्वान/मूर्ख कहा है। इस जीव को अनादि से परपदार्थ और विभाव में सुखरूप बुद्धि होने से परद्रव्य और परभाव की समीपता हो रही है और स्वभाव की समीपता छूट गई है। यहाँ शुद्धि प्रगट नहीं हुई इसीको समीपता छूट गई ह्न ऐसा कहा है।

भगवान आत्मा के प्रति अरोचकभाव और राग-कर्म, संयोगादि के प्रति रोचकभाव ही भगवान आत्मा के प्रति द्वेष है, क्रोध है। यह बात सुनकर जगत के जीवों के माथे पर सल पड़ जाते हैं; पर यह तो सभी चिंताओं से मुक्त करनेवाली बात है।

भाई ! तू तो ज्ञानस्वरूप है न ! तेरे घर में ज्ञान का भण्डार भरा है न ! उसकी समीपता छोड़कर तू कहाँ जाता है? पुद्गल में..! चारगति में.. ! पर वहाँ तो तू अनादि से रखड़ रहा है।

सामान्य ध्रुवज्ञायक स्वभाव के सिवा अन्य समस्त बंधु हेय हैं, एक सामान्यध्रुव स्वभाव ही उपादेय है ह्न ऐसी जिसको खबर नहीं, वह अविद्वान-अज्ञानी पर के सत्कार में रुका है।

श्रोता : शरीर, कुटुंब, पैसा आदि के सत्कार में तुरंत सुख मिलता है !

अरे भाई ! तुझे वास्तविकता का भान नहीं है; पर के सत्कार में तो तुरंत दु:ख मिलता है। भगवान आत्मा का मार्ग जुदा है। सामान्य स्वभाव के आश्रय से वीतरागता उत्पन्न हो ह्न ऐसा तेरा मार्ग है, उसी में सच्चा सुख है।

सूक्ष्म से सूक्ष्म राग का भी सत्कार करे सो दु:खरूप है। स्वभाव को भूलकर राग और पर की समीपता-सत्कार करनेवाले को चारगति का सहवास नहीं छूटता; क्योंकि स्वभाव के अतिरिक्त किसी भी अन्य भाव में सुखबुद्धि हो तो कर्म बंधे बिना न रहे और कर्म के फल में चारगति में भटके बिना न रहे।

32 वर्ष पहले एक भाई ने प्रश्न किया था कि 5-10 हजार लोगों को धर्म का उपदेश देकर समझावे वो महान है या अपने आत्मा को समझे वो महान है ?

भाई ! अपने आत्मा में डूबकर अनुभव करे वो ही महान है, दूसरे जीवों को समझाने का भाव तो शुभभाव है और उसमें हित मानना विपरीत मान्यता है। ऐसी विपरीत मान्यता सहित उपदेशदाता तो सामनेवाले जीव को धर्म प्राप्त करने में निमित्त भी नहीं होता।

आज तक इसने अपनी आत्मा की तरफ दृष्टि नहीं दी, स्वभाव का सत्कार नहीं किया और उपदेश आदि शुभभावों के सत्कार में अटका है, इसीलिये इसे पुद्गल नहीं छोड़ता, इसका पाँच परावर्तनों का क्रम नहीं टूटता। बाह्य ज्ञान का जो माहात्म्य करते हैं, उनके पुद्गल की समीपता वर्तती है।

श्रोता : प्रभु ! लेकिन आपने इन शास्त्रों को लिखा है न ?

शास्त्र हम नहीं लिखते। ये तो पुद्गल की रचना है, जिसे पुद्गल ही करते हैं। हम तो शास्त्र लिखने के शुभभाव को भी हितरूप नहीं जानते। शुभभाव में हितबुद्धि करने को हमारा आत्मा तैयार नहीं है।

भगवान ज्ञायकमूर्ति आत्मा के आश्रय में जो पड़ा है, उसे सिद्धगति नहीं छोड़ेगी। आत्मा के सिवाय शुभराग अथवा परलक्ष्यी ज्ञान के आश्रय में जो पड़ा है, उसे निगोदगति नहीं छोड़ेगी। सूक्ष्म से सूक्ष्म राग में भी जिसे हितबुद्धि है, उसे

निगोद के शरीर की चाह समझना। आत्मा के अतिरिक्त अन्य किसी दूसरे में हर्ष आवे, प्रमोद हो, उपादेय बुद्धि हो, आदर सत्कार वर्ते, तो उसे निश्चित ही पुद्गल बंध होगा। उससे उसे कोई नहीं छुड़ा सकता।

प्रभो ! यह तो छोटी सी भूल की बहुत बड़ी सजा है ?

नहीं, ऐसा नहीं है। यह कोई ककड़ी के चोर को फाँसी नहीं है। भगवान आत्मा अनंत गुणों का पिण्ड सर्वज्ञदेव है, उसका इसने अनादर किया है। एक-एक गुणरूपी महाराजा-बादशाह का अनादर किया है।

राजा राजसभा में बैठा हो और कोई उसे आकर गले में चमड़े से जड़ा हुआ हार पहना जाये तो यह तो छोटी-सी भूल है; लेकिन भगवान ज्ञायक चैतन्य बादशाह को राग और विकल्प से लाभ माननेरूपी उल्टी मान्यता का हार पहनावे वह बड़ा अपराध है। इसके फल में चतुर्गति का सहवास नहीं छूटता। जिसे अपने ज्ञानानन्द स्वभाव को छोड़कर राग अथवा कर्म के फल की या परावलम्बी ज्ञान की महिमा है, उसे पुद्गल नहीं छोड़ता ह्न इसप्रकार उसे कर्मबंध होने से चारगति में भ्रमण होगा।

भगवान आत्मा अपने को भूलकर राग में एकत्व मानकर उसमें लीन हो जाये, उसी का नाम संसार है, यही मिथ्यात्व है। गाथा में पुद्गल शब्द आया है, उसका अर्थ राग ही है; क्योंकि पुद्गल परमाणु में आत्मा कैसे रम सकता है ? अज्ञानी जीव राग में रमता है, उसी में तल्लीन होता है, यही उसका मिथ्यात्व है।

जो जीव अपने ज्ञान-दर्शन-आनंदरूप त्रिकाली स्वभाव में नहीं रमता, पुद्गल के राग में रमता है, उसे पुद्गल का साथ नहीं छूटता। उसने पुद्गल का साथ नहीं छोड़ा, इसलिये पुद्गल भी उसका साथ नहीं छोड़ता।

अज्ञानी जीव अपनी वर्तमान उपयोग भूमि अथवा ज्ञान के व्यापार में राग के साथ एकत्व करता है अर्थात् पुद्गल के प्रति राग-द्वेष-मोह, क्रोध, मान, माया, लोभादि करके उसमें रमता है, इसलिये पुद्गल भी चार गति में कभी भी उसका साथ नहीं छोड़ता। **(क्रमश:)**

पुद्गल का विशेष स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 27 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

एयरसरूवगंधं दोफासं तं हवे सहावगुणं।
विहावगुणमिदि भणिदं जिणसमये सव्वपयडत्तं ।।27।।

जो एक रसवाला, एक वर्णवाला, एक गंधवाला और दो स्पर्शवाला हो, वह स्वभावगुणवाला है; विभावगुणवाले को जिनसमय में सर्व प्रगट (सर्व इन्द्रियों से ग्राह्य) कहा है।

(गतांक से आगे...)

देखो, यह सुगन्ध और दुर्गन्ध गंधगुण की पर्यायें हैं; गुण नहीं। गंध गुण तो ध्रुव त्रिकाल है और वह पर्याय में नहीं आता। द्रव्य पर्याय में नहीं आता ह्न इसका अर्थ ही यह है कि द्रव्य के अनंत गुण भी पर्याय में नहीं आते अर्थात् पर्यायरूप नहीं हो जाते। अहो ! जहाँ परमाणु का ध्रुवद्रव्य और उसके अनंतगुण पर्याय में नहीं आते, वहाँ नित्यानंदस्वरूप ध्रुव आत्मा और उसके गुण, पर्याय में कैसे आयेंगे ?

अहो ! वीतराग की कथनी वीतरागभाव को ही प्रसिद्ध करती है। कहते हैं ह्न हे जीव ! तेरी कैसी भी पर्यायरूप दशा हो, तू उसको मत देख; अन्दर में ध्रुव त्रिकाली तत्त्व मौजूद है, जो कभी पर्याय में नहीं आया, उसको देख !

भाई ! मार्गणा की चर्चा में भी ऐसी ही बात आती है न ! कि मार्गणा को मत देख; क्योंकि तू मार्गणा नहीं है और तुझमें भी मार्गणा नहीं है। अहा ! मैं भव्य हूँ या अभव्य हूँ ह्न ऐसा भी मत देख ! तू तो बस ध्रुव त्रिकाली द्रव्य को देख। द्रव्य को देखा यानी सब ज्ञात हो गया।

श्रोता : मार्गणा जीव में नहीं है, तो क्या वह जीव नहीं है ?

नहीं, वह तो पर्याय की बात है, इसलिये व्यवहार जीव है; परन्तु निश्चय जीव

नहीं है। भाई ! अद्भुत बात है । केवलज्ञान में भी जीव नहीं आया; क्योंकि एक अंश में पूरा ध्रुव अंशी कैसे आये ? एक अंश में पूरा अंशी नहीं समाता। अहा ! जिसप्रकार ज्ञान और आनंदादि गुणों का अखण्ड तत्त्व आत्मा कभी भी पर्याय/अंश में नहीं आता; उसीप्रकार परमाणु भी इन रंग-रस आदि की पर्यायों में नहीं आता।

कठोर-कोमल, भारी-हल्का, शीत-ऊष्ण, स्निग्ध और रूक्ष इन आठ स्पर्शों में से अन्तिम चार स्पर्शों के अविरुद्ध दो स्पर्श ह्न ये जिनमत में परमाणु के स्वभाव गुण कहे गये हैं।

देखो ! स्पर्श की कोमल, कठोर इत्यादि आठ पर्यायें है न ! एक तो परमाणु में इन आठ पर्यायों में से अन्तिम चार स्पर्शों के अविरुद्ध दो स्पर्श होते हैं। अर्थात् ऊष्णपर्याय होवे तो उस समय शीतपर्याय नहीं होती और शीतपर्याय के समय ऊष्णपर्याय नहीं होती; परन्तु शीतपर्याय और स्निग्धपर्याय अथवा ऊष्णपर्याय और स्निग्धपर्याय एकसाथ हो सकती है अथवा शीतपर्याय और रूक्षपर्याय एक साथ हो सकती है।

अहा ! यहाँ परमाणु की पर्याय लेना है न? तो एक रस, एक वर्ण, एक गंध और ऊपर कहे गये आठ स्पर्शों में से अन्तिम चार स्पर्शों में अविरुद्ध दो स्पर्श ह्न इसप्रकार परमाणु के स्वभावगुण अर्थात् स्वभावपर्यायें वीतराग भगवान के ज्ञान में हैं।

श्रोता : विभाव पुद्गल माने क्या ?

अहा ! दो परमाणुओं से लेकर अनंत परमाणुओं का बना हुआ स्कन्ध विभाव पुद्गल है और उस विभाव पुद्गल की विभावपर्यायें होती हैं। यहाँ विभावगुण का अर्थ विभावपर्यायें हैं।

यह द्वि-अणुकादि स्कन्धरूप विभाव पुद्गल के विभावगुण सकल इन्द्रिय समूह द्वारा ग्राह्य है ह्न ऐसा इस गाथा का अर्थ है। देखो ! परमाणु इन्द्रियग्राह्य नहीं था, जबकि यह स्कन्ध इन्द्रियग्राह्य है ह्न ऐसा कहते हैं। भाई ! यह अंगुली एक स्कन्ध पिण्ड है। उसमें एक-एक रजकण अपने स्वचतुष्टय से रहता है। इसका नित्य द्रव्य तो पर्याय में आया ही नहीं; अपितु इसकी पर्याय भी स्कन्ध के अन्य परमाणु को छूती तक नहीं है।

(शेष पृष्ठ 4 पर ...)

छहढाला प्रवचन

मनुष्यगति के दुःखों का वर्णन

जननी उदर वस्यो नव मास, अंग सकुचतैं पायो त्रास।
निकसत जे दुःख पाये घोर, तिनको कहत न आवे ओर।।१३।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे ...)

बाह्य सुखों के पीछे लगने से अन्दर के सच्चे आत्मिकसुख को जीव भूल जाता है, अज्ञान से उसका भावमरण होता है और वह दुःखी होता है। वास्तव में देखा जाये तो देह के वियोगरूप मरण जीव को कष्टदायक नहीं है; किन्तु मोहरूप भावमरण ही कष्टदायक हैं। जीव को दुःख नहीं सुहाता; तथापि अज्ञान के कारण यह दुःख का ही अनुभव कर रहा है। अरे, अज्ञान का दुःख वचन से कहा नहीं जा सकता। मनुष्यगति में गर्भ व जन्म के जो दुःख हैं, उसका थोड़ा वर्णन किया; फिर उसके बाद भी वह कैसे-कैसे दुःख भोगता है? इसका कथन करने के लिये आगामी छन्द कहते हैं ह्न

बालपने में ज्ञान न लह्यो तरुणसमय तरुणीरत रह्यो।
अर्धमृतक सम बूढ़ापनो, कैसे रूप लखे आपनो।।१४।।

तीर्थंकरादि के जीव तो बालपन से ही आत्मज्ञान सहित होते हैं, पूर्वभव से ही आत्मा का ज्ञान साथ लेकर अवतरते हैं। उत्तमकाल में तो इस भरतक्षेत्र में भी आत्मज्ञान सहित जीव अवतरित होते थे और विदेहक्षेत्र में तो अब भी ऐसे आराधक जीव अवतरित होते हैं। नया आत्मज्ञान मनुष्य को आठ वर्ष की आयु के पहले प्रगट नहीं होता; परन्तु जो पूर्वभव से ही आत्मज्ञान साथ में लेकर आते हैं, उन्हें तो बचपन में भी आत्मज्ञान रहता है। अभी तो डगमगाते कदमों से चलना भी न आता हो; किन्तु अन्दर में देह से भिन्न आत्मा का अनुभवज्ञान निरन्तर चल रहा हो; ऐसे आराधक जीव तो बचपन से ही ज्ञानी होते हैं।

यहाँ दुःख के प्रकरण में ऐसे आराधक जीवों की बात नहीं है; क्योंकि वे तो दुःख से छूटकर सुख के पथ में आ गये हैं। इस काल में कोई आराधक जीव इस भरतक्षेत्र

में अवतार नहीं लेते; परन्तु यहाँ अवतार होने के बाद किसी पूर्वसंस्कार आदि के कारण कोई-कोई विरले जीव आत्म अनुभव प्रगट करके आराधक हो जाते हैं; वे ही धन्य हैं और सुखी हैं। यहाँ तो जो जीव मिथ्यात्वादि के सेवन से दुःखी हो रहा है, उसको दुःख से छुड़ाने के लिए यह उपदेश है।

बड़ी कठिनाई से मिला हुआ यह मनुष्य जीवन भी बहुत से लोग अज्ञान में ही गँवा देते हैं। बालपन तो बेसमझ में खोया, उस वक्त आत्महित की बात सूझी ही नहीं। कई लड़के बचपन से लेकर २०-२५ साल तक का जीवन खेलकूद में एवं लौकिक निःसार पढ़ाई में गँवाते हैं, उन्हें तो धर्म के अभ्यास की फुरसत ही कहाँ है? और यदि फुरसत मिल भी जाये तो खेलकूद में, घूमने-फिरने में, सिनेमा देखने में या तास खेलने में समय गँवाकर पाप बाँधते हैं; किन्तु धर्म का अभ्यास नहीं करते; क्योंकि उन्हें धर्म का प्रेम ही नहीं।

अरे ! धर्म का संस्कार तो बचपन से ही होना चाहिए। धर्मसंस्कार के बिना बालपन तो खेलने में ही खो दिया और जब युवा हुआ, तब स्त्री आदि में मोहित हो गया अथवा धन कमाने के लिये हैरान होकर जिंदगी में आत्महित का अवसर खो दिया। पीछे जब वृद्धावस्था आने लगी और शरीर में ताकत घटने लगी, तब उस वृद्धावस्था में अर्द्धमृतक जैसी अपनी हालत देखकर दुःखी हो रोने लगा; परन्तु फिर भी आत्मा को नहीं पहिचाना। शरीर की बाल-युवा-वृद्ध तीनों अवस्था से भिन्न मैं ज्ञानस्वरूप आत्मा हूँ ह्न इसप्रकार आत्मस्वरूप की पहचान बिना मनुष्य-जीवन को हार गया; और जीवन में कभी भी अपनी पहचान करने का प्रयास नहीं किया।

अरे भाई ! इस मनुष्य जीवन में जवानी का काल तो धर्म की कमाई करने का अच्छा अवसर है। ऐसे समय में तुम रत्नचिन्तामणि जैसा यह अवसर विषय-कषाय में क्यों खो रहे हो? इस मनुष्य जीवन का प्रत्येक पल बहुत मूल्यवान है, लाखों-अरबों रुपये देने से भी इसका एक पल नहीं मिल सकता। अतः कवि कहते हैं ह्न

दौल ! समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवे।
यह नरभव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक् नहिं होवे।।

भाई ! जीवन का यह समय तुम गेंद उछालने में (क्रिकेट आदि में) गँवाते हो

अथवा धन कमाने में गँवाते हो; परन्तु तुम्हारे जीवन का गेंद उछल रहा है और आत्मा की कमाई का अवसर बीता जा रहा है, उसका तो कुछ ख्याल करो। ऐसा अवसर धर्म के बिना खोना नहीं चाहिए। मनुष्य भव अनन्तबार मिल चुका; परन्तु आत्मज्ञान के बिना जीव ने उसको व्यर्थ गँवा दिया। जवानी का काल विषयवासना में या धनादि के मोह में ऐसा खो दिया कि आत्मा की बात सूझी ही नहीं। इसप्रकार जीवन का कीमती समय पाप में गँवा दिया। यद्यपि आत्मा का हित करना चाहे तो जवानी में भी कर सकता है; किन्तु जो आत्मा की दरकार नहीं करते, उनको कहते हैं कि भाई ! अनन्तबार तुमने आत्मा की दरकार के बिना जवानी पाप में ही गँवाई है; अब तो इस अवसर में आत्महित के लिए अवश्य जागृत होओ।

यह खबर भी नहीं रहेगी कि वृद्धावस्था कब आ गई? और जवानी कहाँ चली गई? वृद्धावस्था आने पर अधमरा जैसा हो जाता है। देह में अनेकविध रोग हो जायें, चलना-फिरना बंद हो जायें, खाने-पीने की पराधीनता हो जाये, इन्द्रियाँ काम करें नहीं; आँखों से बराबर दिखे नहीं, स्त्री-पुत्रादि भी कुछ बात सुनें नहीं और खुद को आत्मज्ञान तो है नहीं, दृष्टि तो संयोग की तरफ ही लगी हुई है; इसलिये मानो सारा जीवन ही हार बैठा हो ह्न ऐसा वह मोही जीव दुःखी, महादुःखी हो जाता है।

पर भाई ! अपना आत्मा तो उन बाल-युवा-वृद्ध तीनों अवस्थाओं से भिन्न ज्ञानानंदस्वरूप है, उसको तू जानता नहीं है और आत्मभान के बिना मनुष्यभव को व्यर्थ ही खो रहा है।

वृद्धावस्था में भी यदि आत्मा का कल्याण करना चाहे तो कर सकता है। पहले के जमाने में तो ऐसे प्रसंग बनते थे कि अनेक लोग अपने सिर पर सफेद बाल को देखते ही वैराग्य पाकर दीक्षा ले लेते थे; परन्तु देह से भिन्न आत्मा का जिसको ज्ञान ही नहीं, वह दीक्षा कहाँ से लेगा? अज्ञानी अपने चैतन्यतत्त्व की श्रद्धा को छोड़कर देह की अनुकूलता में ही मूर्छित हो जाता है और प्रतिकूलता आने पर मानो दुःख के ढेर में ही दब जाता है, दीन हो जाता है। ऐसा जीव संयोग से ही अपनी अधिकाई मनाना चाहता है। भाई ! संयोग से तुम अपनी अधिकता मान रहे हो; परन्तु यह तो दिखाओ कि संयोग के बढ़ने से तुम्हारे आत्मा में क्या बढ़ गया ? **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : एक सूक्ष्मपरमाणु अथवा सूक्ष्मस्कन्ध क्या अकेला स्थूलरूप से परिणमन करता है ?

उत्तर : नहीं, दूसरे स्थूलस्कन्ध के साथ मिलाने पर ही उसमें स्वयं स्थूलरूप परिणमन होता है। जिसप्रकार अनादि का अज्ञानी जीव, ज्ञानी के निमित्तपूर्वक ही ज्ञानी होता है; उसीप्रकार स्थूलस्कन्ध के निमित्तपूर्वक ही दूसरा सूक्ष्मस्कन्ध या परमाणु स्थूलरूप से परिणमन करता है। यह अनादि नियम है।

प्रश्न : एक परमाणु को आँख से या सूक्ष्मदर्शी यन्त्रादि से देख सकते हैं क्या ?

उत्तर : नहीं, पाँच इन्द्रियों सम्बंधी ज्ञान का वह विषय नहीं है। अवधिज्ञान से परमाणु को जान सकते हैं; किन्तु अवधिज्ञान बाहर के किसी साधन से होता नहीं, अवधिज्ञान आँख से जानता भी नहीं; तथा परमाणु को जान सके ऐसा सूक्ष्म अवधिज्ञान तो ज्ञानी के ही होता है। अर्थात् यह नियम है कि जो एकत्वरूप परम आत्मा को जानता है, वही परमाणु को जान सकता है।

प्रश्न : आपके समयसार में अध्यात्म का विषय सूक्ष्म है। हम तो यात्रा करने आये हैं; अतः हमें कोई सरल बात बताइये?

उत्तर : हम तो सबको भगवान देखते हैं। अन्दर नित्यानन्द प्रभु त्रिकाली चैतन्य भगवान विराजमान है, उसके आश्रय से धर्म होता है। विकल्प और पर का लक्ष छोड़कर अन्दर में भूतार्थस्वभावी भगवान का आश्रय ही करने योग्य कार्य है।

प्रश्न : वर्तमान में कोई केवलज्ञानी दिखाई नहीं देता; अतः केवलज्ञान सिद्ध नहीं होता ?

उत्तर : केवलज्ञान असिद्ध नहीं है ह्न ऐसा कषायप्राभृत-जयधवला पुस्तक-1/44 में कहा है। क्योंकि स्वसंवेदन प्रत्यक्ष द्वारा केवलज्ञान के अंशरूप ज्ञान की निर्बाधपने उपलब्धि होती है। अर्थात् मतिज्ञानादिक केवलज्ञान के अंशरूप हैं और उनकी उपलब्धि स्वसंवेदन प्रत्यक्ष से सभी को होती है, इसलिए केवलज्ञान के

अंशरूप अवयव प्रत्यक्ष हैं और अवयव के प्रत्यक्ष होने पर अवयवी (केवलज्ञान) को परोक्ष कहना युक्त नहीं है।

प्रश्न : अनेकान्त क्या है तथा जैनशासन और उसकी व्यवस्था क्या है ?

उत्तर : एक वस्तु में वस्तुपने की निपजानेवाली परस्पर विरुद्ध दो शक्तियों का प्रकाशित होना अनेकान्त है। जो वस्तु नित्य है, वही अनित्य है; जो एक है, वही अनेक है ह्न इसप्रकार प्रकाशित होना ही जैनशासन का रहस्य है। अन्यप्रकार से कहें तो जो सत्ता को अभेद द्रव्यरूप कहे, वह निश्चय और जो उसी सत्ता को गुणभेदरूप कहे, वह व्यवहार ह्न यह अनेकान्त है।

अनेकान्त में विशेष तो यह है कि जो वस्तु है उसी वस्तु में विरुद्ध दो शक्तियाँ हैं। नित्य और अनित्य वस्तु स्वयं ही है। यह ज्ञान की पर्याय शब्द सुनने से बदलकर नई उत्पन्न हुई है, वह शब्द से नहीं हुई, अपने से ही हुई है। ज्ञान की पर्याय बदलकर नई-नई होती है, वह शास्त्र बाँचने से नहीं होती, किन्तु अपने से ही होती है। स्वयं ही नित्य और अनित्य धर्मरूप दो विरुद्ध शक्तियों से प्रकाशित हो, उसको जैनशासन का अनेकान्त कहते हैं। एक तत्त्व में दूसरे तत्त्व का अभाव है, वह अपने से है; पर से नहीं है ह्न यही अनेकान्त है ह्न यही जैनशासन है। पदार्थ की व्यवस्था अपने से ही व्यवस्थित होती है ह्न यही जैनशासन की व्यवस्था है।

वीतराग-विज्ञान के स्वामित्व का विवरण (फार्म 4 नियम नं. 8)

समाचार पत्र का नाम	:	वीतराग-विज्ञान (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
प्रकाशक एवं मुद्रक	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक का नाम	:	डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं। ह्न प्रकाशक : **ब्र. यशपाल जैन**

ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

समाचार दर्शन ह्न

विदाई एवं दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 24 फरवरी, 08 को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों को भावभीनी विदाई दी गई।

इस प्रसंग पर प्रात: सम्मेद शिखर विधान का आयोजन किया गया। पूजन-विधान के समस्त कार्य अंकित जैन एवं संदीप पाटील के निर्देशन में समस्त महाविद्यालय परिवार के सहयोग से सम्पन्न हुये। विधानोपरान्त दो सत्रों में विदाई सभा का आयोजन किया गया।

सभा की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री, श्री दिलीपजी शाह, श्री रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर आदि महानुभावों ने छात्रों के हितार्थ मार्मिक उद्बोधन दिये।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका के अतिरिक्त श्री जमनालालजी, श्री कैलाशचंदजी एवं श्री प्रकाशचंदजी सेठी भी मंचासीन थे।

समारोह में शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों ने अपनी आगामी योजनाओं के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए महाविद्यालय परिवार एवं गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। सभी ने तत्त्वप्रचार-प्रसार हेतु सदैव सहयोग देने की उत्कृष्ट भावना को अभिव्यक्त किया।

शास्त्री अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों को श्रीमती कमलाजी भारिल्ल एवं श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल द्वारा तिलक लगाकर एवं द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा माल्यार्पण, श्रीफल एवं स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों से शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों को 'सिद्धान्तशास्त्री' की उपाधि प्रदान की गई।

कार्यक्रम के अन्त में महाविद्यालय के विशिष्ट क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान करनेवाले विद्यार्थियों में **आदर्श छात्र** के रूप में उपाध्याय वरिष्ठ के छात्र रजित जैन भिण्ड, **साहित्यिक क्षेत्र** में शास्त्री द्वितीय वर्ष से विशेष जैन बड़ामलहरा, **चिकित्सकीय योगदान** के लिये शास्त्री अंतिम वर्ष से रविन्द्र महाजन, **विशेष अध्ययन-उन्नति** के लिये शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्र जे.जयकुमार को पुरस्कृत किया गया।

महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों को अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्द भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से '**चलते-फिरते सिद्धों से गुरु**' एवं श्री गम्भीरमलजी सोनी फुलेरावालों की ओर से '**चैतन्य वाटिका**' नामक पुस्तकें वितरित की गई।

आभार प्रदर्शन तपिश जैन उदयपुर ने किया।

25 वीं अखिल भारतीय जैन विद्या संगोष्ठी सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर एवं त्रिलोक उच्चस्तरीय अध्ययन एवं अनुसंधान संस्थान कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 8 से 10 मार्च, 08 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन में 25 वीं अखिल भारतीय जैन विद्या संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का मुख्य विषय **जैन धर्म एवं हिन्दू धर्म** था।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में मंचासीन ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में जैनधर्म और हिन्दूधर्म की तुलना करते हुये यह स्पष्ट किया कि जैनधर्म हिन्दूधर्म की शाखा नहीं अपितु स्वतंत्र प्राचीनतम धर्म है।

राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रो. दयानंद भार्गव ने अपने विशिष्ट व्याख्यान में जैनधर्म को वस्तु स्वभाव पर आधारित होने से सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक सिद्ध किया। उन्होंने श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि मुझे यह देखकर खुशी होती है कि संस्था के छात्र स्वयं संस्कारवान, ज्ञानवान एवं शीलवान होकर बाहर निकलते हैं और समाज को भी संस्कारवान बनाते हैं। वास्तव में यह संस्था दुनिया की तमाम संस्थाओं के बवण्डरों के मध्य में दीपशिखा के समान दैदिप्यमान है। मैं तो चाहता हूँ कि यू.जी.सी के प्रतिनिधियों को यहाँ आकर देखना चाहिये कि यह शिक्षण संस्था किस तरह से कार्य करती है।

संगोष्ठी के निदेशक डॉ. पी. सी. जैन ने समागत अतिथियों का परिचय दिया तथा श्री राजकुमारजी काला ने सभी का हार्दिक अभिनन्दन एवं स्वागत किया।

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के सात सत्रों में निम्नलिखित विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ ह्न पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, डॉ. उदयचंदजी जैन उदयपुर, डॉ. ऋषभजी फौजदार वैशाली, डॉ. पी.सी. जैन जयपुर, प्रो. लालचंदजी जैन, डॉ. श्रेयांसजी जैन, डॉ. सत्यप्रकाशजी दिल्ली, डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. सुदर्शनलालजी वाराणसी, डॉ. प्रेमचंदजी रांवका, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, श्री धीरजजी जैन जोधपुर, डॉ. मंजूजी जैन, वैद्य प्रभुदयालजी कासलीवाल, श्री अखिलजी बंसल जयपुर, डॉ. राजकुमारी जैन अजमेर, डॉ. कृष्णाजी जैन ग्वालियर, डॉ. कल्पनाजी जैन नई दिल्ली, डॉ. महिमाजी वासल अलवर, डॉ. निर्मलाजी गोदिका उदयपुर, डॉ. नन्दिता सिंघवी बीकानेर, डॉ. भागचंदजी जैन, कु. सीमा जैन, डॉ. बी. एल. सेठी झुंझुनूं, श्री ताराचंदजी पाटनी, डॉ. शिवसागर त्रिपाठी, पं. नीतेश शाह आदि 71 विद्वानों ने अपने वक्तव्य के माध्यम से जैनधर्म एवं हिन्दूधर्म के विविध पहलुओं को तुलनात्मक रूप से प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी में समागत सभी अतिथि विद्वानों को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से सत्साहित्य भेंटकर सम्मानित किया गया।

संगोष्ठी के अंतर्गत हुये सम्पूर्ण कार्यक्रम डॉ. पी.सी. जैन के निर्देशन में सम्पन्न हुये। ●

सम्पादक संघ का अधिवेशन वैशाली में...

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संपादक संघ का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन भगवान महावीर की पावन जन्मभूमि **वासोकुण्ड वैशाली** में 16 से 18 अप्रैल, 08 तक प्रस्तावित है। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव, कार्यकारिणी का गठन तथा जैन पत्र-पत्रिकाओं के विकास पर विशेष चर्चा होगी। जैन मीडिया नामक स्मारिका का विमोचन भी इस अवसर पर किया जायेगा। स्मारिका में जैन पत्र-पत्रिकाओं की सूची एवं पत्र सम्पादकों का परिचय तथा अन्य उपयोगी लेख प्रकाशित किये जायेंगे। स्मारिका हेतु रचनाऐं व पत्रकारों का परिचय फोटो सहित सादर आमंत्रित है।

ह्न अखिल बंसल, महामंत्री
129, जादोन नगर-बी, स्टेशन रोड़ दुर्गापुरा, जयपुर

वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न

अलवर (राज.) : यहाँ चेतन एन्क्लेव में दि. 17 से 19 फरवरी,08 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की प्रथम वर्षगाँठ पर रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित प्रेमचन्दजी शास्त्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुये।

इस अवसर पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के तीनों समय समयसार पर सारगर्भित प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित किशनचन्दजी जैन एवं पण्डित अरुणजी शास्त्री के सान्निध्य का लाभ मिला। सभी कार्यक्रम पण्डित अजितजी शास्त्री के निर्देशन एवं संचालन में सम्पन्न हुये।

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया सम्मानित

मुम्बई महानगर पालिका की महापौर डॉ. शोभा रावल ने दिनांक 8 मार्च,08 को विश्व महिला दिवस के अवसर पर डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया को महिला एवं बाल विकास क्षेत्र में अनुकरणीय उपलब्धियों एवं योगदान हेतु स्मृतिचिह्न, शॉल, श्रीफल और प्रशस्तिपत्र प्रदान कर विशेषरूप से सम्मानित किया।

मुम्बई में धर्म प्रभावना

मुम्बई (महा.) : यहाँ श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल एवं श्री सीमंधर जिनालय के अंतर्गत श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल के निर्देशन में आयोजित '**जैन अध्यात्म स्टडी प्रोग्राम एट योअर डोर स्टेप**' कार्यक्रम के अंतर्गत पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई और पण्डित किशोरजी शास्त्री पैठण द्वारा मुम्बई महानगर में श्रोताओं की सुविधानुसार उनके घर पर मनवांछित समय और विषय पर कक्षा ली जाती है। इन कक्षाओं से सैकड़ों लोग लाभान्वित हो रहे हैं। इस योजना को चारों ओर से प्रशंसा और उत्साह प्राप्त हो रहा है।

यहाँ पण्डित आदित्यजी शास्त्री द्वारा चर्चगेट, झवेरी बाजार, ग्रान्टरोड, सिक्कानगर, वरली, नेपेन्सी रोड़, दादर, लोअर परेल, वाल्केश्वर रोड़, चौपाटी, विले पार्ले, कांदिवली, बोरीवली, प्रभादेवी एवं गोरेगाँव में प्रतिदिन पाँच कक्षायें ली जाती हैं। इसके साथ ही पण्डित किशोरजी द्वारा घाटकोपर, साइन, मुलुण्ड, डोंबीवली, कल्याण, बोरीवली, चारकोपविलेज, चौपाटी, चेम्बूर आदि स्थानों पर प्रतिदिन पाँच कक्षायें ली जाती हैं।

वैराग्य समाचार

1. पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी श्री महेन्द्रकुमारजी सेठी जयपुर का दिनांक 27 फरवरी, 08 की रात्री में शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप 93 वर्ष के थे।

ज्ञातव्य है कि आप गुरुदेवश्री के अनन्य शिष्यों में से थे। आपने अनेक बार सोनगढ जाकर तत्त्वज्ञान का लाभ लिया। श्री टोडरमल स्मारक भवन में चलनेवाले समस्त निर्माण कार्यों में आपकी सदैव सक्रिय भूमिका रही। आपके निधन से न केवल ट्रस्ट; अपितु जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

आपकी निधन पर दिनांक 29 फरवरी को श्री टोडरमल स्मारक भवन में शोक सभा आयोजित कर हार्दिक श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन इत्यादि अनेक विद्वान एवं गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

2.इन्दौर निवासी देवकुमारसिंहजी कासलीवाल का 88 वर्ष की आयु में दिनांक 16 फरवरी को शान्त परिणामों से देहावसान हो गया।

आप भारवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, राष्ट्रीय दिगम्बर जैन महासमिति, मक्सी पार्श्वनाथ, पावागिरि ऊन, सिद्धवरकूट आदि विविध संस्थाओं, तीर्थ क्षेत्रों के संरक्षक, अध्यक्ष आदि सम्माननीय पदों पर सुशोभित रहे। आपने जीवन पर्यंत विविध धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं व्यावसायिक संस्थाओं के साथ सक्रियता से जुड़ उन्हें अपनी नई ऊँचाईयाँ प्रदान की। आपके चिर वियोग से समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

3. श्रीमती शारदादेवी जैन ध.प. स्व.श्री हरकचन्दजी सोनी (मनोहरथानावालों) का दिनांक 5 फरवरी को देहावसान हो गया है। आपकी स्मृति में आपके सुपुत्र नरेन्द्रकुमार, वीरेन्द्रकुमार, महेन्द्रकुमार एवं जिनेन्द्रकुमार जैन की और से जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 500/-रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही निर्वाण की प्राप्ति करें ह्न यही भावना है।

डाक टिकिट भेजकर निःशुल्क मँगा लें

प्रसिद्ध विद्वान् एवं रचनाकार अध्यात्म रत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल की नवीनतम कृति **'चलते-फिरते सिद्धों से गुरु'**ह्न पृष्ठ 232, मूल्य 16/- एवं **'समाधि और सल्लेखना'** पृष्ठ-48, मूल्य 5/- प्रकाशक ह्न श्री अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् ट्रस्ट, जयपुर का निःशुल्क वितरण अध्यात्मरत्नाकर पं. रतनचन्द भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर की ओर से सन्तों, ब्रह्मचारियों, त्यागियों, विद्वानों, मंदिरों एवं वाचनालयों हेतु किया जा रहा है।

इच्छुक महानुभाव 5/- रुपये के फ्रेश डाक टिकिट निम्न पते पर भेजकर मँगा लेवें। ध्यान रहे योजना **18 अप्रैल, 08** महावीर जयन्ती तक ही है। ह्न अ. भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् ट्रस्ट,
129, जादोन नगर, 'बी', स्टेशन रोड़, दुर्गापुरा, जयपुरह्न18 (राज.)

42 वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर, मंगलायतन में

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की प्रेरणा से निर्मित पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित बयालीसवाँ श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 18 मई से 04 जून, 2008 तक मंगलायतन (अलीगढ़-उ.प्र.) में होना निश्चित हुआ है। शिविर के माध्यम से अध्ययन करानेवाले बन्धुओं (अध्यापकों) एवं मुमुक्षु भाई-बहिनों को शिक्षण-विधि में प्रशिक्षित किया जायेगा।

इस अवसर पर आपको डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित कैलाशचन्दजी बुलन्दशहर, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया अलीगढ़, पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ़ आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों/कक्षाओं का लाभ मिलेगा।

प्रशिक्षण शिविर में पहुँचने वाले भाई-बहनों को इसकी पूर्व सूचना निम्नांकित पते पर अवश्य भेज देवें, ताकि उनके ठहरने एवं भोजनादि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट,
ए-4, बापूनगर, जयपुर ह्न 15 (राज.)
फोन नं. (0141) 2705581/2707458

ह्न तीर्थधाम मंगलायतन
अलीगढ़ आगरा मार्ग, डी. पी. एस. के सामने,
सासनी, जिला-महामायानगर (उ.प्र.)
फोन नं.(0571) 2223391

विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में सेमीनार

नई दिल्ली : बाहुबली एन्क्लेव, नई दिल्ली में 22 से 24 अप्रैल, 08 तक श्री अ. भा. दिग. जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में समयसार पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया जा रहा है। सेमीनार आचार्यश्री विद्यानन्दजी के पावन सान्निध्य एवं विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के मार्गदर्शन में सम्पन्न होगा।

इस अवसर पर वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध विद्वानों को आजीवन श्रुतसेवा हेतु सम्मानित किया जायेगा तथा विद्वत्परिषद् द्वारा प्रदत्त पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। **ह्न अखिल बंसल, प्रचार मंत्री**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

1 से 8 अप्रैल	कोलकाता	तीनलोक विधान
17 से 20 अप्रैल	आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली	महावीर जयन्ती व उपकार दिवस
22 से 24 अप्रैल	बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली	समयसार पर सेमिनार
3 मई से 8 मई	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
18 मई से 4 जून	अलीगढ	प्रशिक्षण शिविर
5 जून से 30 जुलाई	विदेश यात्रा	धर्म प्रचारार्थ
3 से 12 अगस्त	जयपुर	शिक्षण-शिविर

डॉ. भारिल्ल एवं कु. अनुप्रेक्षा शास्त्री का 2008 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 25 वीं विदेश यात्रा है। उनके साथ कुमारी अनुप्रेक्षा शास्त्री भी जा रही हैं। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्नस्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन एवं फैक्स नं.दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	लॉसएंजिल्स	**Naresh Palkhiwala (R) 562-404-1729 (O) 626-814-8425 ext.8725 naresh.palkhiwala@westcov.org**	6 से 12 जून
2.	सान् फ्रांसिस्को	**Ashok Sethi (R) 408-517-0975 ashok_k_sethi@yahoo.com Vikas Jain 903-366-6524 vikasnd@gmail.com**	13 से 19 जून
3.	मियामी	**Mahendra Shah (R) 305-595-3833 (O) 305-371-2149 E-mail : bhitap@bellsouth.net**	20 से 25 जून
4.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088 Bipin Bhayani (O) 815-939-3190 (R) 815-939-0056 (F) 815-939-3159**	26 जून से 6 जुलाई
5.	फ्लोरिडा	**Dhara Bhavin Ajmera (R) 9043027643, (M) 9044774308 E-mail : ajmera_dhara@yahoo.com**	7 से 11 जुलाई
6.	वाशिंगटन डी.सी.	**Narendra Jain (R) 703-426-4004 E-mail : jainnarendra@hotmail (F) 703-321-7744**	12 से 16 जुलाई
7.	डलास	**Atul Khara (R) 972-867-6535 (O) 972-424-4902 (F) 972-424-0680 E-mail : insty@verizon.net**	17 से 23 जुलाई
8.	लंदन	**Bhimji Bhai Shah 192-384-0833 bhimji@hevika.com**	24 से 30 जुलाई